पाठ्यक्रम संरचना (Course Structure)

सेमेस्टर	पत्र (Paper)	कोर कोर्स (Core Course)	विभागीय चयनित पाठ्यक्रम (Departmental Elective Course)	सहायक चयनित (Miner Elective)	शोध परियोजना (Research Project)	केडिट (Credit)	अंक (Marks)
प्रथम सेमेस्टर 1st Semester	6	4	–	1	1	28 (4x5+4+4)	500 (100x5)
द्वितीय सेमेस्टर 2nd Semester	5	4	-	-	1	24 (4x5+4)	500 (100x5)
तृतीय सेमेस्टर 3rd Semester	5	2	2		1	24 (4x5+4)	400 (100x4)
चतुर्थ सेमेस्टर 4th Semester	5	2	2		1	24 (4x5+4)	500 (100x5)
कुल	21	12	4	1	4	100	1900

5.11.22

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप चयन आधारित सेमेस्टर प्रणाली (CBCS) पर आधारित

स्नातकोत्तर हिन्दी का पाठ्यक्रम

पत्र–विवरण

पत्र–संकेत संख्या (Paper Code)	पत्र का नाम	क्रेडिट	अंक	कुल क्रेडिट
	प्रथम सेमेस्टर			
MHNC-401	आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी साहित्य का इतिहास	5	100	28
MHNC-402	आदिकालीन एवं मध्यकालीन मुक्तक काव्य	5	100	
MHNC-403	हिन्दी नाट्य एवं कथा साहित्य	5	100	
MHNC-404	भारतीय काव्यशास्त्र	5	100	
MHNP-405	हिन्दी शोध परियोजना	4		
MHNM-406	हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि	4	100	
	द्वितीय सेमेस्टर			
HINC-411	आधुनिककालीन हिन्दी काव्य का इतिहास	5	100	24
HINC-412	आदिकालीन एवं मध्यकालीन प्रबन्ध–काव्य	5	100	
HINC-413	विविध गद्य विधाएं	5	100	
HINC-414	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	5	100	
HINC-415	हिन्दी शोध परियोजना	4	100	
	तृतीय सेमेस्टर			
HINC-501	हिन्दी गद्य एवं पत्रकारिता का इतिहास	5	100	24
HINC-502	आधुनिक काव्य	5	100	
HINE-503 (क) HINE-503 (ख) HINE-503 (ग)	भाषा विज्ञान हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि हिन्दी साहित्य और सिनेमा	5	100	
HINE-504 (क) HINE-504 (ख) HINE-504 (ग)	भारतीय साहित्य तुलनात्मक साहित्य (हिन्दी एवं नेपाली) प्रवासी हिन्दी साहित्य	5	100	
HINP-505	हिन्दी शोध परियोजना	4		
	चतुर्थ सेमेस्टर			24
HINC-511	हिन्दी आलोचना एवं आलोचक	5	100	
HINC-512	छायावादोत्तर काव्य	5	100	
HINE- 513 (क)	प्रयोजनमूलक हिन्दी	5	100	
HINE-513 (ख)	पटकथा एवं विज्ञापन–लेखन			
HINE-513 (ग)	मीडिया–लेखन			
HINE-514 (क)	हिन्दी लोक–साहित्य	5	100	
HINE-514 (ख)	भोजपुरी साहित्य			
HINE-514 (ग)	अवधी साहित्य			
HINE-515	हिन्दी शोध परियोजना	4	100	

कूट–संकेत :

MHNC : एम ए. हिन्दी कोर पेपर; MHNM : एम ए. हिन्दी माइनर इलैक्टिव पेपर; MHNE : एम ए. हिन्दी इलैक्टिव पेपर; MHNP : एम ए. हिन्दी शोध परियोजना।

पाठ्यक्रम से सम्बन्धित कूट संख्या (कोर्स कोड) में पहला अक्षर M मास्टर (स्नातकोत्तर) डिग्री का बोधक है, बाद के दो अक्षर HN हिन्दी विषय के संकेतक हैं और अन्तिम तीसरा अक्षर C, E आदि पाठ्यक्रम की प्रकृति का। अंकों में प्रथम अंक स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के वर्ष का द्योतक हैं और बाद के दो अंक प्रश्नपत्र की संख्या के। उदाहरण के लिये MHNC-401 में M का अर्थ एम. ए. है, HN का अर्थ हिन्दी (Hindi) है, C का कोर पेपर (Core Paper), 4 का चतुर्थ वर्ष और 01 का प्रथम प्रश्नपत्र है।

इसी तरह कूट अक्षरों का अर्थ इस प्रकार होगा–

C - Core Paper; E- Elective; P- Project; M- Miner Elective

आवश्यक निर्देश :

1. यह पाठ्यक्रम एम. ए. में हिन्दी विषय का चयन करने वाले सभी विद्यार्थियों के लिए है।
2. एम. ए. प्रथम वर्ष के दोनों सेमेस्टर (प्रथम एवं द्वितीय) के सभी प्रश्नपत्र सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य (CORE PAPER) होंगे।
3. द्वितीय वर्ष के तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर में प्रथम दो–दो प्रश्नपत्र अनिवार्य पत्र (CORE PAPER) के रूप में होंगे। शेष दो–दो प्रश्नपत्रों के तीन–तीन विकल्प क, ख, ग के रूप में दिये गये हैं। प्रति प्रश्नपत्र विद्यार्थी इनमें से किसी एक का चयन अपनी रुचि और सुविधा के अनुसार कर सकते हैं।
4. प्रथम सेमेस्टर के माइनर प्रश्नपत्र का अध्ययन हिन्दी के विद्यार्थी नहीं करेंगे। हिन्दी के विद्याथियों के लिये किसी अन्य विषय के माइनर प्रश्नपत्र का चयन इसके स्थान पर करना होगा। यह प्रश्नपत्र अन्य विषयों के उन विद्यार्थियों के लिये तैयार किया गया है, जो माइनर विषय के रूप में हिन्दी का चयन करेंगे।
5. सभी विद्यार्थियों का प्रत्येक सेमेस्टर में एक शोध परियोजना करनी होगी जो 4 क्रेडिट की होगी। शोध परियोजना विद्यार्थी किसी शिक्षक के निर्देशन में करेंगे। विद्यार्थी प्रत्येक वर्ष के अन्त में दोनों सेमेस्टर (प्रथम एवं द्वितीय तथा तृतीय एवं चतुर्थ) में शोध परियोजना के अन्तर्गत किये गये कार्य के आधार पर एक शोध–प्रबन्ध तैयार करेंगे, जिसका मूल्यांकन बाह्य एवं आन्तरिक परीक्षकों द्वारा किया जायेगा। इस लघु शोध प्रबन्ध के लिये 100 अंक निर्धारित हैं। इनमें से 50 अंक शोध–प्रबन्ध की गुणवत्ता तथा शेष 50 अंक मौखिकी के लिये निर्धारित हैं। मौखिकी के 50 अंकों में से 25 विद्यार्थी को तभी प्राप्त होंगे, जबकि शोध परियोजना से सम्बन्धित उसका कम–से–कम एक शोधपत्र विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा जारी केयर सूची में सम्मिलित पत्रिका में प्रकाशित होगा।

सहायक (माइनर) पाठ्यक्रम :

- यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिये तैयार किया गया है जो किसी अन्य संकाय/विषय के विद्यार्थी होंगे, परन्तु कला संकाय से हिन्दी को सहायक (माइनर) विषय के रूप में चुनेंगे।

- इस पाठ्यक्रम को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि विद्यार्थियों को साहित्य का आस्वाद भी प्राप्त हो सके और वे प्रतियोगी परीक्षाओं में आने वाले सामान्य हिन्दी के प्रश्नों की तैयारी भी कर सकें।
- हिन्दी का माइनर प्रश्नपत्र चार क्रेडिट का है, जिसके लिये साठ कक्षाएँ निर्धारित हैं।

सामान्य परिणाम (General Outcome)

- विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के साथ–साथ उसमें उपलब्ध साहित्य का आधारभूत ज्ञान प्राप्त होगा।
- साहित्य के मूलभूत स्वरूप, यथा विभिन्न विधाओं, हिन्दी के रोज़गारपरक स्वरूप आदि की जानकारी प्राप्त होगी।
- हिन्दी में रचनात्मक तथा व्यवसायिक कौशल प्राप्त होगा।
- विद्यार्थियों में मानवीय संवेदना, साहित्यिक विवेक, भाषिक कौशल, राष्ट्रीयता की भावना तथा नैतिकता का विकास होगा।
- 'प्रयोजनमूलक हिन्दी'; 'मीडिया लेखन'; 'पटकथा एवं विज्ञापन लेखन' तथा 'हिन्दी साहित्य एवं सिनेमा' जैसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी भाषा एवं साहित्य के नवन्नव आयामों से अवगत होकर अधिक रोजगार–क्षम हो सकेंगे।

5.1.22

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष	
प्रथम सेमेस्टर	

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC401**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी साहित्य का इतिहास**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक एवं मध्यकालीन इतिहास से अवगत कराना है। इसके द्वारा उन्हें हिन्दी भाषा एवं साहित्य की पृष्ठभूमि तथा उसके आदिकालीन स्वरूप से परिचित कराना तथा हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर भक्तिकाल एवं रीतिकाल तक के इतिहास का ज्ञान कराना प्रमुख उद्देश्य रहेगा।

क्रेडिट : 5	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : **75**

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	भारतीय भाषाओं की पृष्ठभूमि; भारत में साहित्य–सृजन की परम्परा; प्राचीन भारतीय साहित्य का सामान्य वैशिष्ट्य; हिन्दी भाषा और साहित्य की पृष्ठभूमि; हिन्दी का अर्थ और क्षेत्र; अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी।	15	1
2.	साहित्य का इतिहास दर्शन और इतिहास लेखन की पद्धतियाँ; हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा; हिन्दी साहित्य के प्रमुख इतिहास–ग्रन्थ; हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन और नामकरण; आदिकाल के नामकरण एवं सीमांकन–सम्बन्धी विविध मत।	15	1
3.	आदिकालीन हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां; आदिकाल की विशेषताएं एवं साहित्यिक प्रवृत्तियां; आदिकालीन हिन्दी साहित्य की विविध धाराएं– रासो साहित्य, आदिकालीन हिन्दी का जैन साहित्य, सिद्ध और नाथ साहित्य; अमीर खुसरो की हिन्दी कविता; विद्यापति और उनकी पदावली तथा लौकिक साहित्य; आदिकालीन साहित्य की *भाषा।*	15	1
4.	भक्ति–आन्दोलन के उदय की पृष्ठभूमि तथा परिस्थितियां; भक्ति–आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्तः–प्रादेशिक वैशिष्ट्य; आलवार सन्त; भक्ति–काव्य के प्रमुख सम्प्रदाय और उनका वैचारिक आधार; पूर्ववर्ती काव्यधाराओं का भक्ति–काव्य पर प्रभाव; निर्गुण–सगुण काव्य और प्रमुख कवि– संत–काव्य, सूफी–काव्य, कृष्ण–काव्य तथा राम–काव्य का परिचय एवं प्रवृत्तियां; भक्तिकालीन साहित्य और लोकजागरण।	15	1
5.	रीतिकाल की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां; रीति की अवधारणा और रीति–काव्य; रीति–काव्य की सामान्य प्रवृत्तियां; रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएं– रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त : सामान्य परिचय, रचनाएं, रचनाकार एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ; रीति कवियों का आचार्यत्व; रीतिकालीन काव्य में लोकजीवन; रीतिकालीन काव्य–भाषा एवं अभिव्यंजना शिल्प; रीतिकालीन गद्य।	15	1

5.12.22

पाठ्यक्रम–परिणाम :

1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी विश्व–भर में सबसे प्राचीन भारतीय साहित्य की परम्परा से संक्षेप में अवगत हो सकेंगे और इस तरह हिन्दी एवं भारतीय साहित्य को समन्वित रूप में देख–समझ सकेंगे।
2. हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक के इतिहास को जान सकेंगे।
3. इतिहास से अवगत होकर विद्यार्थी तत्कालीन परिस्थितियों, उनमें रचे गये साहित्य तथा उसकी विशेषताओं को सम्यक् ढंग से समझ सकेंगें।
4. हिन्दी भाषा तथा उसमें रचित साहित्य की विरासत पर गर्व कर सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये समान रूप से 15 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक टिप्पणी पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को कुल पांच टिप्पणियां लिखनी होंगीं।
3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।
4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखे। .

सहायक ग्रन्थ :

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का भूमिका; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य का आदिकाल;, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5 डॉ. बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
6. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, हिन्दी साहित्य का अतीत : भाग 1, 2; वाणी वितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी।
7. डॉ. नगेन्द्र (संपादक), हिन्दी साहित्य का इतिहास; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
8 डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास; लोकभारती, इलाहाबाद।
9 आ. नन्ददुलारे वाजपेयी, हिन्दी साहित्यः बीसवीं शताब्दी; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10 नलिन विलोचन शर्मा; हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
11 डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त; हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद। प्रथम एवं द्वितीय खण्ड।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष

प्रथम सेमेस्टर

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
MHNC402	**आदिकालीन एवं मध्यकालीन मुक्तक काव्य**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

इस पत्र का उद्देश्य हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक के प्रमुख प्रतिनिधि कवियों के काव्य से विद्यार्थियों का परिचय करवाना है। आदिकालीन और मध्यकालीन हिन्दी साहित्य प्रबन्ध एवं मुक्तक दोनों रूपों में रचा गया है तथा भारतीय जनमानस को इसने काफी गहराई तक प्रभावित किया है। इस पत्र में आदिकालीन एवं मध्यकालीन मुक्तक काव्य को रखा गया है।

क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : **75**

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**क. सरहपाद–दोहाकोश** ख. **गोरखनाथ–सबदी** पाठ्यपुस्तक : **आदिकालीन काव्य;** सम्पादक–डॉ. वासुदेव सिंह; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : भक्ति–काव्य पर सिद्ध–नाथ साहित्य का प्रभाव; सिद्ध साहित्य और सरहपाद; सरहपाद का काव्य–सौष्ठव; नाथ–पन्थ और गोरखनाथ; गोरखनाथ के काव्य की प्रासंगिकता; गोरखनाथ का काव्य–सौन्दर्य।	15	1
2.	**कबीरदास :** **पाठ्य पुस्तक– कबीर;** आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली। **पाठांश–** पद सं.– 1, 2, 33, 41, 123, 130, 134, 160, 163, 168, 191, 199, 224, 247 तथा 256। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : कबीर की भक्ति–भावना; कबीर का रहस्यवाद; कबीर का समाज–दर्शन और उसकी प्रासंगिकता; कबीर की विद्रोह–भावना या क्रान्तिकारी चेतना; कबीर–काव्य का दार्शनिक पक्ष; कबीर : कवि के रूप में।	15	1
3.	**सूरदास :** पाठ्य पुस्तकः **भ्रमरगीत सार**; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली। पदसंख्या–9, 23, 25, 34, 62, 64, 65, 82, 85, 89, 95, 97, 115, 122, 130, 171, 384, 400। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– भ्रमरगीत काव्य–परम्परा और सूरदास; भ्रमरगीत : अन्तर्वस्तु तथा विदग्धता; सूर की भक्ति–भावना; माधुर्य और शृंगार–वर्णन; वात्सल्य–वर्णन; लोक तत्त्व; काव्य–वैशिष्ट्य।	15	1

4.	**मीराबाई :** पाठ्य–पुस्तक : पाठ्य पुस्तक : **मीराँबाई** ; सुधाकर अदीब; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ। पद सं.– 1, 3, 5, 6, 7, 8, 15, 16, 20, 21, 35, 36। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु–** मीरा की भक्ति; विद्रोह–भाव; काव्य–सौन्दर्य; स्त्री–स्वातन्त्र्य चेतना; सामाजिक सरोकार।	15	1
5.	**क. बिहारीलाल :** पाठ्यपुस्तक– **बिहारी रत्नाकर**; संपादक–जगन्नाथदास रत्नाकर । पाठ्यांश : दोहा संख्या–*1, 5, 6, 7, 15, 19, 20, 21, 25, 32, 38, 42, 48, 51, 60, 69, 73, 121, 131, 141, 181, 300, 363, 428 तथा 487।* आलोचना के प्रमुख बिन्दु– सौन्दर्य–भावना एवं श्रृंगार–वर्णन; बिहारी की भक्ति; बहुज्ञता; काव्य–सौष्ठव। **ख. घनानन्द : घनानन्द कवित्त**; संपा.–आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र। पद सं.– 1 से 10 तक। आलोचना के प्रमुख बिन्दु– रीतिमुक्त काव्यधारा और घनानन्द; प्रेम–व्यंजना; सौन्दर्य–वर्णन।	15	1

पाठ्यकम–परिणाम :

1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की प्राचीन एवं मध्यकालीन परम्परा को जान सकेंगे।
2. अपनी साहित्यिक विरासत को समझते हुए उस पर गर्व कर सकेगे।
3. लगभग 800 वर्षों की हिन्दी कविता के माध्यम से विभिन्न युगीन सन्दर्भों को समझ सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रथम प्रश्न को छोड़कर अन्य सभी प्रश्नों के लिये समान रूप से 12 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक व्याख्या पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को व्याख्या हेतु पूछे गये कुल पांच अवतरणों में से तीन की व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या के लिये 9 अंक निर्धारित रहेंगे। इस तरह से यह प्रश्न कुल 27 अंकों का होगा।
3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।
4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का आदिकाल; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
2. डॉ. सदानन्द प्रसाद गुप्त (प्रधान संपादक); नाथपंथ : साधना और साहित्य; प्रथम संस्करण–2020; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।

3. आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी; नाथ सम्प्रदाय; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. पुरुषोत्तम अग्रवाल, अकथ कहानी प्रेम की (कबीर की कविता और उनका समय); दूसरा संस्करण–2010; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. रामचन्द्र तिवारी; कबीर मीमांसा; संस्करण–2011; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. रामकिशोर शर्मा; कबीर ग्रन्थावली (सटीक); नवम संस्करण–2013; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, मध्यकालीन धर्म साधना; साहित्य भवन, इलाहाबाद।
8. डॉ. नगेन्द्रनाथ उपाध्याय, नाथ पंथ और संत साहित्य; काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
9. डॉ. नन्द किशोर पाण्डेय, संत साहित्य की समझ; रचना प्रकाशन, जयपुर।
10. हरबंसलाल शर्मा, सूरदास; पेपरबैक दूसरा संस्करण–2011; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
11. डॉ. रामफेर त्रिपाठी; सूरदास; तृतीय संस्करण–2013, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
12. पूनम कुमारी; स्त्री चेतना और मीरा का काव्य; संस्करण–2009; अनामिका प्रकाशन, दिल्ली।
13. रामदेव शुक्ल; रसमूर्ति घनानन्द; प्रथम संस्करण–2021; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
14. डॉ. बच्चन सिंह; बिहारी का नया मूल्यांकन; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
15. रवीन्द्रकुमार सिंह; बिहारी सतसई : सामाजिक–सांस्कृतिक सम्बन्ध; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष				
प्रथम सेमेस्टर				
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC403**		पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी नाट्य एवं कथा साहित्य**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : गद्य साहित्य में नाटक, उपन्यास एवं कहानी अत्यन्त लोकप्रिय विधाएं हैं। प्रस्तुत पत्र विद्यार्थियों को हिन्दी नाटक एवं कथा साहित्य के वैशिष्ट्य से अवगत कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इसमें प्रतिनिधि रचनाओं के रूप में हिन्दी की बहुख्यात् नाट्य एवं कथा–रचनाओं को रखा गया है।				
क्रेडिट : 5	पूर्णांक : 25+75	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**		
कुल व्याख्यान संख्या : 75				
इकाई	पाठ्यवस्तु		व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**नाटक :** **स्कन्दगुप्त**–जयशंकर प्रसाद **आलोचना के प्रमुख बिन्दु :** जयशंकर प्रसाद का नाट्य–शिल्प; नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'स्कन्दगुप्त' की समीक्षा; 'स्कन्दगुप्त' में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना; 'स्कन्दगुप्त' में युगबोध; स्कन्दगुप्त के प्रमुख पात्र।		15	1
2.	**एकांकी :** **अंधेर नगरी**–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र **औरंगजेब की आखिरी रात**–डॉ. रामकुमार वर्मा **भोर का तारा**–जगदीशचन्द्र माथुर **स्ट्राइक**–भुवनेश्वर **आलोचना के प्रमुख बिन्दु :** एकांकियों की समीक्षा तथा एकांकीकारों की एकांकी कला।		15	1
3.	**उपन्यास :** **गोदान**–प्रेमचन्द **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– प्रेमचन्द की उपन्यास कला; उपन्यास के तत्त्वों के आधार पर गोदान की समीक्षा; प्रमुख पात्र; यथार्थ और आदर्श; स्त्री–विमर्श; गांव और शहर; किसान जीवन; वस्तु–शिल्प वैशिष्ट्य। **अथवा** **बाणभट्ट की आत्मकथा**–हजारीप्रसाद द्विवेदी **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– हिन्दी उपन्यास को आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी का अवदान; 'बाणभट्ट की आत्मकथा' का प्रतिपाद्य; इतिहास और संस्कृति–चेतना; आधुनिकता; स्त्री–दृष्टि; भाषा–शिल्प वैशिष्ट्य।		15	1
4.	**कहानियां :** **उसने कहा था**–चन्द्रधर शर्मा गुलेरी **दुनिया का अनमोल रतन**–प्रेमचन्द **कोसी का घटवार**–शेखर जोशी		15	1

5.11.22

	परिन्दे–निर्मल वर्मा **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– कहानियों की समीक्षा तथा कहानीकारों की कहानी–कला		
5.	**कहानियां :** **गैंग्रीन**–अज्ञेय **तीसरी कसम**– फणीश्वरनाथ रेणु **इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर**–हरिशंकर परसाई **चीफ की दावत**– भीष्म साहनी **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– कहानियों की समीक्षा तथा कहानीकारों की कहानी–कला	15	1

पाठ्यक्रम–परिणाम :

1. विद्यार्थी चयनित रचनाओं के माध्यम से हिन्दी नाट्य एवं कथा साहित्य के वैशिष्ट्य को जान सकेंगे और उसके व्यापक अध्ययन के लिये प्रेरित होंगे।
2. नाट्य एवं कथा साहित्य के अध्ययन के आलोचकीय विवेक से सम्पन्न हो सकेंगे।
3. साहित्यिक अभिरुचि से सम्पन्न विद्यार्थियों में रचनात्मक कौशल का विकास हो सकेगा।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रथम प्रश्न को छोड़कर अन्य सभी प्रश्नों के लिये समान रूप से 12 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक व्याख्या पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को व्याख्या हेतु पूछे गये कुल पांच अवतरणों में से तीन की व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या के लिये 9 अंक निर्धारित रहेंगे। इस तरह से यह प्रश्न कुल 27 अंकों का होगा।
3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।
4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. बच्चन सिंह; हिन्दी नाटक; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
2. सत्येन्द्रकुमार तनेजा (सम्पादक); नाटककार जयशंकर प्रसाद; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
3. सत्येन्द्रकुमार तनेजा (सम्पादक); नाटककार भारतेन्दु की रंग–परिकल्पना; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
4. सिद्धनाथ कुमार; हिन्दी एकांकी; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
5. गोपाल राय; हिन्दी उपन्यास का इतिहास; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. मधुरेश; हिन्दी कहानी का विकास; लोकभारती, दिल्ली।
7. गोपाल राय; हिन्दी कहानी का इतिहास, भाग–1 और भाग–2।
8. इन्द्रनाथ मदान; हिन्दी कहानी: पहचान और परख।

5-11-22

9. डॉ. नामवर सिंह; कहानीः नई कहानी; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. देवीशंकर अवस्थी (संपादक); नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
11. रामस्वरूप चतुर्वेदी; समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष **प्रथम सेमेस्टर**			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC404**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **भारतीय काव्यशास्त्र**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : काव्यशास्त्र का ज्ञान काव्य को सम्यक् रीति से जानने–समझने के लिये आवश्यक होता है। भारत में काव्य की ही भांति काव्यशास्त्र की भी परम्परा अत्यन्त प्राचीन और समृद्ध है। हिन्दी के आचार्यों ने इसमें योगदान देकर इसे और समयानुकूल तथा संगत बनाया है। प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख तत्त्वों से अवगत कराना है।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	भारतीय काव्यशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास; काव्य के लक्षण तथा स्वरूप; काव्य–प्रयोजन; काव्य–हेतु, काव्य के प्रकार।	15	1
2.	**रस सिद्धांत :** रस का अभिप्राय, स्वरूप एवं अवयव; रस–सिद्धान्त का सामान्य परिचय; भरतमुनि का रससूत्र और उसके प्रमुख व्याख्याकार; विभिन्न रसों का सोदाहरण परिचय।	15	1
3.	**विभिन्न काव्य सिद्धान्त :** ध्वनि सिद्धान्त; रीति सिद्धान्त; वक्रोक्ति सिद्धान्त; औचित्य सिद्धान्त का परिचय। शब्द–शक्तियां और ध्वनि का स्वरूप। काव्य के गुण–दोष।	15	1
4.	**अलंकार–विवेचन :** अलंकार सिद्धान्त तथा निम्नलिखित अलंकारों का सोदाहरण परिचय– अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रान्तिमान, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, विशेषोक्ति, विभावना, द्रष्टान्त, उदाहरण, प्रतीप, काव्यलिंग, अपह्नुति, असंगति तथा विरोधाभास।	15	1
5.	**छन्द विवेचन :** छन्द की परिभाषा और तत्त्व; छन्दों का वर्गीकरण; काव्य में छन्दों का महत्त्व। अग्रांकित छन्दों के लक्षण और उदाहरण– वंशस्थ, वसन्ततिलका; मन्दाकान्ता; शार्दूलविक्रीडित; कवित्त, सवैया, दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला, बरवै, हरिगीतिका, कुण्डलिया, छप्पय तथा मुक्त छन्द।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्रीय परम्परा से परिचित हो सकेगे।
2. भारतीय काव्यशास्त्र और उसके प्रमुख तत्वों से अवगत हो सकेंगे।
3. काव्यशास्त्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में साहित्य के सम्यक् अनुशीलन का विवेक उत्पन्न हो सकेगा।

5.11.22.

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये समान रूप से 15 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक टिप्पणी पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को कुल पांच टिप्पणियां लिखनी होंगीं।
3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।
4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. पी.बी काणे, हिस्टरी आफ संस्कृत पोयटिक्स; मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. देश पाण्डे, साहित्य शास्त्र; पापुलर बुक डिपो, पूना।
3. डॉ. नगेन्द्र, काव्यशास्त्र की भूमिका; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
4. डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. डॉ. भगीरथ मिश्र; नया काव्यशास्त्र; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
6. पं. बलदेव उपाध्याय; संस्कृत आलोचना; षष्ठ संस्करण–2019; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
7. भगीरथ मिश्र; हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास।
8. डॉ. भगीरथ मिश्र; काव्यशास्त्र; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
9. प्रो. धर्मदेव तिवारी 'शास्त्री'; सुगम भारतीय काव्यशास्त्र; संस्करण–2016; चन्द्रमुखी प्रकाशन, दिल्ली।
10. गणपतिचन्द्र गुप्त; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त; पुनर्मुद्रण–2014; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
11. रामचन्द्र तिवारी; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा; द्वितीय संस्करण–2007; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
12. देवेन्द्रनाथ शर्मा; काव्य के तत्व; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

<table>
<tr><td colspan="4">एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="4">प्रथम सेमेस्टर</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="2">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNP405</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
हिन्दी शोध परियोजना</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="4">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों में शोध एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करना है। उच्च शिक्षा का महत् उद्देश्य शोध है। किसी विषय पर शोध परियोजना करने से विद्यार्थियों में शोध–क्षमता का विकास हो और वे आगे चलकर एक अच्छे शोधकर्ता बन सकें, इस दृष्टि से इस पत्र की आयोजना पाठ्यक्रम में की गयी है।</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="2">क्रेडिट : 5</td><td>पूर्णांक :</td><td>उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="4">कुल व्याख्यान संख्या : 75</td><td></td></tr>
<tr><td>इकाई</td><td colspan="2">पाठ्यवस्तु</td><td>व्याख्यान संख्या</td><td>क्रेडिट संख्या</td></tr>
<tr><td>1.</td><td colspan="2">इस पत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी किसी शिक्षक के निर्देशन में हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जुड़े किसी विषय का चयन कर एक शोध परियोजना पर कार्य करेंगे।</td><td>15</td><td>4</td></tr>
</table>

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थियों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा।
2. पीएच.डी. करने से पूर्व विद्यार्थी शोध की सही प्रविधि जान सकेगे और शोध कार्य की बारीकियों को समझकर उसमें दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी के एक गम्भीर अध्येता तथा उत्कृष्ट शोधार्थी के रूप में विकसित होने में यह पत्र सहायक होगा।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष			
प्रथम सेमेस्टर (माइनर इलैक्टिव)			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNM406**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : यह प्रश्नपत्र हिन्दी से इतर विद्यार्थियों के लिये है। इसलिये इसकी रचना इस प्रकार की गयी है, जिससे अन्य विषयों के विद्यार्थी हिन्दी भाषा, साहित्य और देवनागरी लिपि से सम्बन्धित उन महत्त्वपूर्ण बातों को जान सकें जिनसे वे हिन्दी भाषा, साहित्य और देवनागरी लिपि की सामान्य विशेषताओं से अवगत भी हो सकें और किन्हीं प्रतियोगी परीक्षाओं में भी उन्हें कुछ सहायता मिल सकें।			
क्रेडिट : 5	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : 75			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**हिन्दी की संवैधानिक स्थिति :** राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा तथा हिन्दी; हिन्दी के क्षेत्र– क, ख, ग; भारतीय संविधान में राजभाषा संबंधी प्रावधान– अनुच्छेद 343 से 351 तक; राष्ट्रपति के आदेश सन् 1952, 1955 एवं 1960; राजभाषा अधिनियम–1963 यथा संशोधित–1967; राजभाषा नियम–1976 यथा संशोधित 1987; राजभाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका एवं चुनौतियां।	15	1
2.	**कार्यालयी हिन्दी :** प्रारूपण, संक्षेपण, टिप्पणी, प्रतिवेदन, ज्ञापन, मसौदा, अनुस्मारक, अधिसूचना, पृष्ठांकन तथा पत्र–लेखन।	15	1
3.	**हिन्दी भाषा और साहित्य का संक्षिप्त इतिहास :** हिंदी भाषा का उद्भव और विकास; हिन्दी का अर्थ, क्षेत्र और उसमें प्रचलित प्रमुख बोलियां; साहित्य के इतिहास का काल विभाजन और नामकरण; आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिककाल का संक्षिप्त परिचय।	15	1
4.	**देवनागरी लिपि :** देवनागरी लिपि का उद्भव और विकास; देवनागरी लिपि की विशेषताएं; देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता; देवनागरी लिपि में सुधार के प्रयत्न; देवनागरी लिपि का मानकीकरण।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी हिन्दी की संवैधानिक स्थिति को जानकर राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में उसकी सही भूमिका को समझते हुए राजभाषा के रूप में उसके प्रति अपने कर्तव्य–निर्वाह हेतु और अधिक सचेत हो सकेंगे।
2. कार्यालयी हिन्दी से सम्बन्धित पत्राचार को जानकर हिन्दी में अपनी कार्य–कुशलता बढ़ा सकेंगे।

8.11.22

3. हिन्दी भाषा, साहित्य और देवनागरी लिपि से सम्बन्धित मूलभूत जानकारियों को प्राप्त कर इन विषयों से प्रतियोगी परीक्षाओं में आने वाले सामान्य प्रश्नों के उत्तर देने के लिये अच्छे ढंग से तैयार हो सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये समान रूप से 15 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक टिप्पणी पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को कुल पांच टिप्पणियां लिखनी होंगीं।
3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।
4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखने को बाध्य हो।

सहायक ग्रंथ :

1. कैलाश नाथ पाण्डेय; प्रयोजनमूलक हिन्दी की नयी भूमिका; तृतीय संस्करण–2018; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. डॉ. भोलानाथ तिवारी एवं डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ (संपादक); पत्र–व्यवहार निदेशिका; संस्करण–1997; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
3. आ. रामचन्द्र शुक्ल; हिन्दी साहित्य का इतिहास; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. डॉ. नगेन्द्र (संपादक); हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, दिल्ली।
5. डॉ. बच्चन सिंह; हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. कमला शंकर त्रिपाठी; प्रयोजनमूलक हिन्दी; प्रथम संस्करण–2011;

5-11-22

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष

द्वितीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
MHNC411	**आधुनिककालीन हिन्दी काव्य का इतिहास**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के आधुनिक इतिहास विशेषकर काव्येतिहास की जानकारी देना है। इतिहास के बिना सम्यक् अध्ययन के किसी युग के साहित्य को समुचित ढंग से नहीं समझा जा सकता। अतः इसमें आधुनिक युग में रचे गये साहित्य, उसके लिये प्रेरक परिस्थितियों, विभिन्न काव्यान्दोलनों तथा उनके प्रभाव सहित आधुनिक हिन्दी काव्य के अनेकानेक चरणों, उनमें रचे गये काव्य, उसकी प्रवृत्तियों तथा रचयिता कवियों के बारे में जानकारी प्रस्तुत की गयी है।

क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : **75**

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**आधुनिक काल (भारतेन्दु युग) :** पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां (सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक); आधुनिक काल का प्रारम्भ और नामकरण; उन्नीसवीं शताब्दी में स्वाधीनता संघर्ष एवं भारतीय पुनर्जागरण, हिन्दी काव्य को भारतेन्दु युग का अवदान; भारतेन्दु मण्डल के कवि तथा अन्य कवि; काव्यभाषा का निर्णय और भारतेन्दु युग; भारतेन्दुयुगीन कविता की मूल चेतना और विशेषताएं।	15	1
2.	**द्विवेदी युग :** नवजागरण का प्रभाव; नये काव्य–परिवर्तन का स्वरूप; महावीर प्रसाद द्विवेदी और तत्कालीन हिंदी कविता; काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली को प्रतिष्ठा; द्विवेदीयुगीन कविता : प्रमुख प्रवृत्तियां, रचनाएं एवं रचनाकार; स्वतन्त्रता–आन्दोलन और द्विवेदीयुगीन कविता।	15	1
3.	**छायावाद :** पृष्ठभूमि, नामकरण और सीमांकन; प्रमुख छायावादी कवि और उनका काव्य; छायावादकालीन अन्य प्रमुख कवि और उनका काव्य; नवजागरण और छायावाद; छायावादी काव्य–प्रवृत्तियां; राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्यधारा; छायावादकालीन काव्य–भाषा का स्वरूप और प्रदेय।	15	1
4.	**उत्तर छायावादी काव्य और काव्यान्दोलन :** हालावाद; प्रगतिवाद; प्रयोगवाद; नई कविता; स्वातन्त्र्योत्तर कविता; साठोत्तरी कविता; नवगीत तथा अन्य काव्यान्दोलन।	15	1
5.	**समकालीन कविता व अन्य काव्य–परिवर्तन :** समसामयिक परिवर्तनों, यथा– भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, औद्योगीकरण, बाजारीकरण आदि के प्रभाव और समकालीन कविता; दलित–चेतना, स्त्री–चेतना और जनजातीय चेतना की कविताएं; प्रवासी–काव्य; हिन्दीतर क्षेत्रों का हिन्दी–काव्य; विस्थापन की पीड़ा का काव्य; हिन्दी में अनूदित काव्य;	15	1

	21वीं सदी की हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियां।		

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस प्रश्नपत्र के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास के आधुनिककाल में लिखे काव्य, उसके लिये प्रेरक परिस्थितियों तथा उसकी प्रवृत्तियों से अवगत हो सकेंगे।
2. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य से आधुनिककालीन काव्य के अन्तर को जान सकेंगे तथा नवयुगीन चेतना एवं संवेदना को समझ सकेंगे।
3. भारतीय स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी साहित्य की भूमिका को जान सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये समान रूप से 15 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक टिप्पणी पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को कुल पांच टिप्पणियां लिखनी होंगीं।
3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।
4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखने को बाध्य हो।
6. **सहायक ग्रन्थ :**

   1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
   2. आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का भूमिका; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
   3. आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य का आदिकाल;, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
   4. आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
   5. डॉ. बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
   6. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, हिन्दी साहित्य का अतीत : भाग 1, 2; वाणी वितान, ब्रहमनाल, वाराणसी।
   7. नगेन्द्र (संपादक), हिन्दी साहित्य का इतिहास; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
   8. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास; लोकभारती, इलाहाबाद।
   9. आ. नन्ददुलारे वाजपेयी, हिन्दी साहित्यः बीसवीं शताब्दी; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
   10. आ. नलिन विलोचन शर्मा; हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
   11. डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त; हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (प्रथम एवं द्वितीय खण्ड); लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष
द्वितीय सेमेस्टर

पाठ्यकम संख्या (COURSE CODE) :	पाठ्यकम शीर्षक (COURSE TITLE) :
MHNC412	**आदिकालीन एवं मध्यकालीन प्रबन्ध–काव्य**

पाठ्यकम का उद्देश्य (Course objetives) :

कवियों द्वारा हिन्दी साहित्य के आदिकाल से ही उत्कृष्ट प्रबन्ध–काव्यों के सृजन की परम्परा चली आयी है। एक–से–एक श्रेष्ठ महाकाव्य हिन्दी में उपलब्ध हैं, जिन्होंने परवर्ती कवियों पर तो अपना प्रभाव डाला ही है, जनता को भी बड़े व्यापक स्तर पर प्रभावित और प्रेरित किया है। इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को आदिकाल से लेकर मध्यकाल तक लिखे गये हिन्दी के प्रसिद्ध प्रबन्ध–काव्यों और उनकी विशेषताओं से परिचित कराना है।

केडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : **75**

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	केडिट संख्या
1.	चन्दवरदाई : **पृथ्वीराजरासो–रेवा तट** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : रासो काव्य–परम्परा और पृथ्वीराजरासो; पृथ्वीराजरासो की प्रामाणिकता; तत्कालीन परिवेश और पृथ्वीराजरासो; रासो का काव्य–सौष्ठव; रेवा तट का काव्य–वैशिष्ट्य।	15	1
2.	**मलिक मुहम्मद जायसी** **पद्मावत– नागमती वियोग वर्णन** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : सूफी काव्य–परम्परा और 'पद्मावत'; 'पद्मावत' में प्रेम–व्यंजना; 'पद्मावत' में लोक–तत्त्व; 'पद्मावत' का काव्य–सौष्ठव; पद्मावत के प्रतीकार्थ; नागमती वियोग–वर्णन का वैशिष्ट्य।	15	1
3.	**तुलसीदास** **श्रीरामचरितमानस**; गीता प्रेस, गोरखपुर **उत्तरकाण्ड** : दोहा संख्या– 21 से 41। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– राम–काव्य–परम्परा और तुलसीदास; निर्गुण का स्वरूप तथा कबीर और तुलसी के राम में अन्तर; तुलसी का समन्वयवाद, भक्ति–भावना, लोक–मंगल; दार्शनिक सिद्धान्त तथा काव्यगत विशेषताएँ।	15	1
4.	**केशवदास :** **रामचन्द्रिका– अंगद–रावण संवाद** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– केशव का आचार्यत्व; राम–काव्य–परम्परा और 'रामचन्द्रिका'; काव्य–वैभव; संवाद–योजना।	15	1
5.	**भूषण : शिवा बावनी** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– रीतिकालीन कविता और भूषण; भूषण के काव्य में युगबोध; भूषण–काव्य की अन्तर्वस्तु; भूषण की काव्यकला।	15	1

पाठ्यकम परिणाम :

1. प्राचीन एवं मध्यकालीन श्रेष्ठ प्रबन्ध–काव्यों को इस पत्र के अन्तर्गत चयनित किया गया है। इनके अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों को प्रबन्ध–काव्यों के स्वरूप एवं महत्ता का परिज्ञान हो सकेगा।
2. मध्यकालीन जीवन की दिशा बदल देने के साथ ही समाज पर आज तक अपना प्रभाव बनाये हुए इन प्रबन्ध–काव्यों की विशेषताओं से विद्यार्थियों का परिचय हो सकेगा।
3. प्राचीन एवं मध्यकालीन जीवन–मूल्यों तथा काव्य–मूल्यों का भी विद्यार्थियों को ज्ञान हो सकेगा।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रथम प्रश्न को छोड़कर अन्य सभी प्रश्नों के लिये समान रूप से 12 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक व्याख्या पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को व्याख्या हेतु पूछे गये कुल पांच अवतरणों में से तीन की व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या के लिये 9 अंक निर्धारित रहेंगे। इस तरह से यह प्रश्न कुल 27 अंकों का होगा।
3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।
4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का आदिकाल; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
2. डॉ. नामवर सिंह, पृथ्वीराज रासो की भाषा; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. डॉ. सुमन राजे; चन्दवरदाई; प्रथम संस्करण–2005;उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
4. डॉ. प्रभाकर शुक्ल; मलिक मुहम्मद जायसी;उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
5. रामलाल वर्मा, जायसी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, 1979।
6. मुंशीलाल पाठक, मलिक मोहम्मद जायसी और उनका काव्य, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
7. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, मध्यकालीन धर्म साधना; साहित्य भवन, इलाहाबाद।
8. रामनरेश त्रिपाठी, तुलसीदास और उनकी कविता (भाग–1), हिन्दी मंदिर, प्रयाग, 1937।
9. राजपति दीक्षित, तुलसीदास और उनका युग, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1953।
10. डॉ. भगवानशरण भारद्वाज (सम्पादक); तुलसी पंचशती स्मृति–पारिजात; योगक्षेम प्रकाशन, चित्रकूट, सिन्धुनगर, बरेली।
11. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
12. प्रो. हरीशकुमार शर्मा; तुलसी साहित्य का आधुनिक सन्दर्भ; प्रथम संस्करण–2012; साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष द्वितीय सेमेस्टर				
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC413**		पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **विविध गद्य विधाएं**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : नाटक, कहानी एवं उपन्यास जैसी विधाओं के अतिरिक्त आधुनिक काल में अनेक गद्य विधाएं अस्तित्व में आयी हैं। इनमें से कतिपय प्रमुख गद्य विधाओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना तथा उनके प्रति आलोचनात्मक विवेक के साथ अध्ययन की दृष्टि उत्पन्न करना ही इस पत्र का उद्देश्य है।				
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**		
कुल व्याख्यान संख्या : **75**				

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**आत्मकथा :** मन्नू भण्डारी—**एक कहानी यह भी** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**— हिन्दी आत्मकथा का स्वरूप और 'एक कहानी यह भी'; 'एक कहानी यह भी' में मन्नू भण्डारी का व्यक्तित्व; स्त्री–विमर्श का परिप्रेक्ष्य और मन्नू भण्डारी की आत्मकथा; 'एक कहानी यह भी' की शिल्प–संरचना।	15	1
2.	**जीवनी :** शिवरानी देवी—**प्रेमचन्द घर में** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**— हिन्दी जीवनी साहित्य और 'प्रेमचन्द घर में'; 'प्रेमचन्द घर में' जीवनी के आधार पर प्रेमचन्द का व्यक्तित्व और कृतित्व; जीवनी के तत्त्वों के आधार पर 'प्रेमचन्द घर में' की समीक्षा; 'प्रेमचन्द घर में' की भाषा–शैली।	15	1
3.	**निबन्ध :** भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—**भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है** बालमुकुन्द गुप्त—**एक दुराशा** रामचन्द्र शुक्ल—**कविता क्या है** राजेन्द्र प्रसाद—**शिक्षा और संस्कृति** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**— निबन्धों का प्रतिपाद्य एवं समीक्षा; निबन्धकारों की निबन्ध–कला।	15	1
4.	**ललित निबन्ध :** हजारी प्रसाद द्विवेदी—**नाखून क्यों बढ़ते हैं** विद्यानिवास मिश्र—**मेरे राम का मुकुट भीग रहा है** कुबेरनाथ राय—**उत्तराफाल्गुनी के आस–पास** विवेकी राय—**उठ जाग मुसाफिर** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**— निबन्धों का प्रतिपाद्य एवं समीक्षा; निबन्धकारों की निबन्ध–कला।	15	1

5.	**विविध गद्य :** महादेवी वर्मा–**ठकुरी बाबा** (रेखाचित्र) रामधारी सिंह दिनकर–**संस्कृति के चार अध्याय** (कर्मठ वेदान्त, स्वामी विवेकानन्द) हरिशंकर परसाई–**भोलाराम का जीव** (व्यंग्य) राहुल सांकृत्यायन–**मेरी तिब्बत यात्रा** (यात्रा–वृतान्त) **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– विधागत प्रकृति के आधार पर रचनाओं की समीक्षा तथा रचनाकारों का वैशिष्ट्य।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. कथेतर गद्य साहित्य का विद्यार्थियों को ज्ञान हो सकेगा।
2. गद्य की विविध विधाओं से अवगत होकर साहित्य–सृजन के विविध आयामों को विद्यार्थी जान–समझ सकेंगे।
3. उनके भीतर साहित्य–सृजन की प्रेरणा और क्षमता जाग्रत हो सकेगी।
4. गद्य साहित्य के अध्ययन का आलोचनात्मक विवेक उत्पन्न हागा।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रथम प्रश्न को छोड़कर अन्य सभी प्रश्नों के लिये समान रूप से 12 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक व्याख्या पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को व्याख्या हेतु पूछे गये कुल पांच अवतरणों में से तीन की व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या के लिये 9 अंक निर्धारित रहेंगे। इस तरह से यह प्रश्न कुल 27 अंकों का होगा।
3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।
4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. रामचन्द्र तिवारी; हिन्दी का गद्य साहित्य; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. रामचन्द्र तिवारी; हिन्दी गद्या; प्रकृति और रचना सन्दर्भ; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी : विन्यास और विकास; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. वेदवती राठी, हिन्दी ललित निबन्ध : स्वरूप विवेचन; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. विजयमोहन सिंह, आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण; ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली।
6. नामवर सिंह, हिन्दी का गद्य पर्व; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. चौकीराम मिश्र, हजारीप्रसाद द्विवेदी : समग्र पुनरावलोकन; लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
8. डॉ. भगवानशरण भारद्वाज, हिन्दी जीवनी साहित्य : सिद्धान्त और अध्ययन; परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष				
द्वितीय सेमेस्टर				
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : MHNC414		पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **पाश्चात्य काव्यशास्त्र**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : भारतीय काव्यशास्त्र की ही भांति पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा भी अत्यन्त समृद्ध है। आधुनिक साहित्य का सम्यक् अध्ययन बिना पाश्चात्य काव्यशास्त्र के समुचित ज्ञान के नहीं हो सकता। अतः इस पत्र में पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्त, सिद्धान्तकार तथा महत्वपूर्ण मान्यताओं को सम्मिलित किया गया है।				
क्रेडिट : 5	पूर्णांक : 25+75	उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत		
कुल व्याख्यान संख्या : 75				

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	प्लेटो– अनुकरण सिद्धांत। अरस्तू की काव्य–विषयक मान्यताएं– अनुकरण, विरेचन और त्रासदी। लोंजइनस– उदात्त तत्व। क्रोचे– अभिव्यंजनावाद।	15	1
2.	आई. ए. रिचर्डस– सम्प्रेषण सिद्धान्त; मूल्य सिद्धांत तथा काव्य भाषा। टी. एस. इलियट– परम्परा और निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत। कॉलरिज– कल्पना सिद्धान्त। वर्ड्सवर्थ– काव्यभाषा।	15	1
3.	मैथ्यू ऑर्नल्ड के साहित्य सिद्धान्त। पाश्चात्य आलोचना के कतिपय उपकरण : मिथक; फन्तासी; कल्पना; प्रतीक और बिम्ब; बिम्ब–प्रतीकवाद।	15	1
4.	विविध साहित्यिक वाद : आदर्शवाद; यथार्थवाद; मनोविश्लेषणवाद; स्वच्छन्दतावाद; अस्तित्ववाद; संरचनावाद एवं उत्तर–संरचनावाद।	15	1
5.	समकालीन आलोचना की कतिपय अवधारणाएं : विडम्बना (आइरनी); अजनबीपन (एलियशन); विसंगति (एब्सर्ड); अन्तर्विरोध (पैराडॉक्स); विखण्डन (डिकन्स्ट्रक्शन); आधुनिकता; उत्तर आधुनिकता।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं को जान सकेंगे।
2. भारतीय के साथ–साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के अध्ययन से काव्यशास्त्र की एक सम्यक् समझ उनमें विकसित हो सकेगी।
3. आधुनिक साहित्य के अध्ययन एवं समीक्षा हेतु इस पत्र का अध्ययन सहायक सिद्ध होगा।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये समान रूप से 15 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक टिप्पणी पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को कुल पांच टिप्पणियां लिखनी होंगीं।
3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।
4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखने को बाध्य हो।

सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. उदयशंकर श्रीवास्तव; पाश्चात्य समीक्षा के चार सूत्रधार; शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली।
2. डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय; पाश्चात्य काव्य चिन्तन; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
3. निर्मला जैन; पाश्चात्य साहित्य चिन्तन; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्लीं
4. रामचन्द्र तिवारी; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. गणपतिचन्द्र गुप्त; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. राजनाथ शर्मा; पाश्चात्य काव्यशास्त्र : नयी प्रवृत्तियां; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष			
द्वितीय सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNP415**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी शोध परियोजना**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों में शोध एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करना है। उच्च शिक्षा का महत् उद्देश्य शोध है। किसी विषय पर शोध परियोजना करने से विद्यार्थियों में शोध–क्षमता का विकास हो और वे आगे चलकर एक अच्छे शोधकर्ता बन सकें, इस दृष्टि से इस पत्र की आयोजना पाठ्यक्रम में की गयी है।			
क्रेडिट : 5	पूर्णांक : 25+75	उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत	
कुल व्याख्यान संख्या : 75			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	इस पत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी किसी शिक्षक के निर्देशन में हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जुड़े किसी विषय का चयन कर एक शोध परियोजना पर कार्य करेंगे और उस कार्य के आधार पर एक शोध–प्रबन्ध तैयार करेंगे। शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन आन्तरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा किया जायेगा और विद्यार्थियों की मौखिक परीक्षा भी ली जायेगी। इस पत्र हेतु कुल पूर्णांक 100 होंगे, जिनमें से शोध–प्रबन्ध का मूल्यांकन 50 अंकों में किया जायेगा और 25 अंकों के लिये मौखिक परीक्षा होगी। शेष 25 अंक विद्यार्थी को तभी मिलेंगे, जब शोध परियाजना से सम्बन्धित विषय पर उसका कम–से–कम एक शोधपत्र यूजीसी केयर लिस्ट में सम्मिलित या पीयर रिव्यूड पत्रिका में प्रकाशित होगा।	15	08 (4+4)

पाठ्यक्रम परिणाम :

4. विद्यार्थियों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा।
5. पीएच.डी. करने से पूर्व विद्यार्थी शोध की सही प्रविधि जान सकेंगे और शोध कार्य की बारीकियों को समझकर उसमें दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
6. विद्यार्थी के एक गम्भीर अध्येता तथा उत्कृष्ट शोधार्थी के रूप में विकसित होने में यह पत्र सहायक होगा।